ट्रक पर
बैठी बत्तख

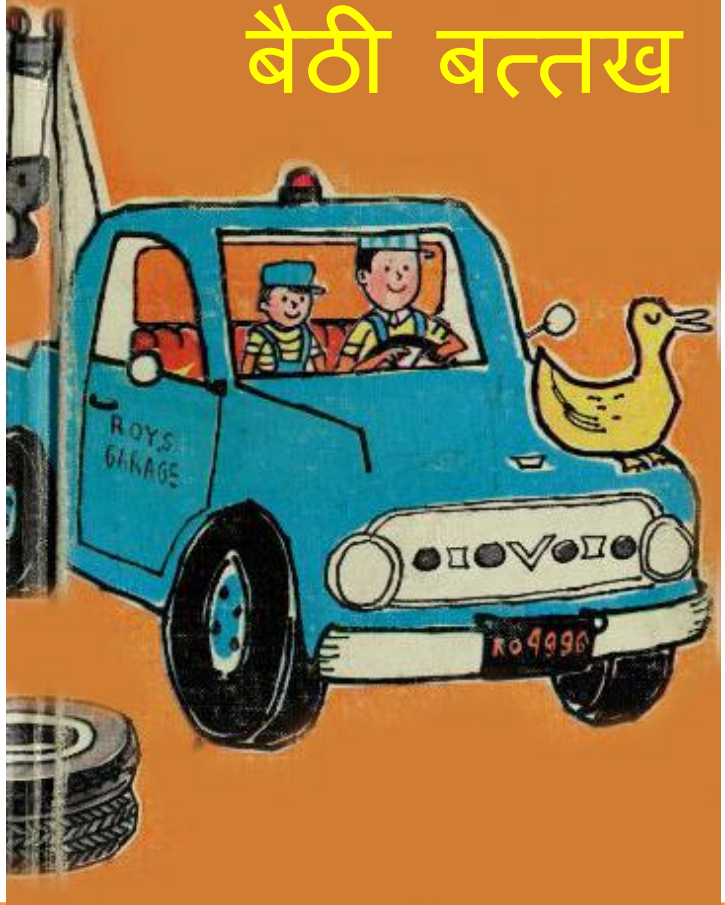

ट्रक पर
बैठी
बत्तख

जैक के पास बहुत
सारे पालतू जानवर थे.

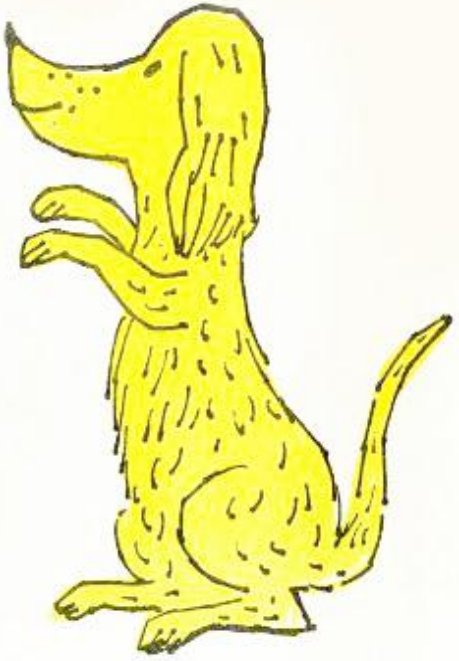

उसके पास एक कुत्ता,

दो बिल्लियाँ,

तीन मेंढक,

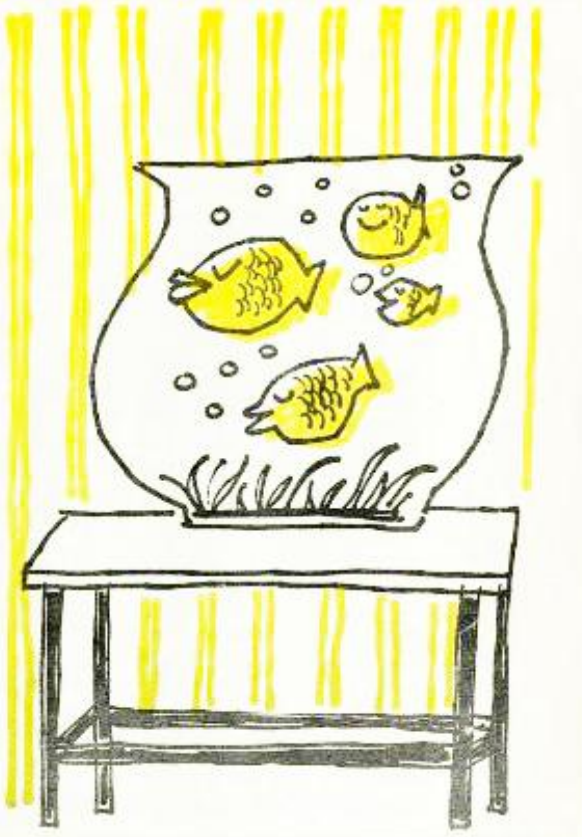

चार सुनहरी मछलियाँ,

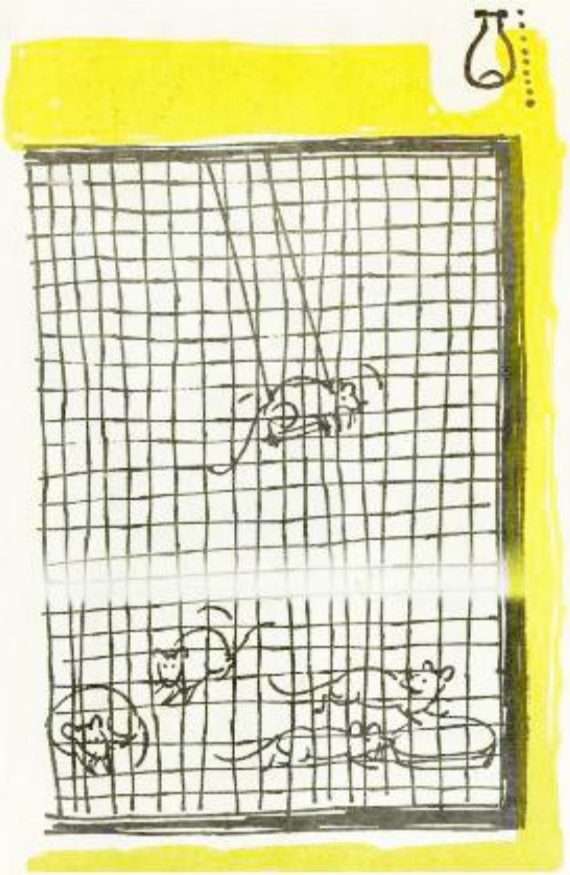

पांच सफ़ेद चूहे,

और छह खरगोश के बच्चे थे!

“जैक,” माँ ने कहा,
“तुम्हारे पास बहुत सारे पालतू जानवर हैं.”
“ज़रा सोचो माँ!” जैक ने कहा.
“क्या कभी किसी के पास बहुत सारे
पालतू जानवर हो सकते हैं?”
“हाँ,” माँ ने कहा.
“तुम्हारे पास बहुत सारे पालतू जानवर हैं!
भौं-भौं! मियाऊँ!
हर समय मुझे उनकी आवाजें
सुनाई देती रहती हैं!”

“पों! पों!

वो किसी पालतू जानवर की आवाज़ नहीं थी.

“पों! पों!

वो एक ट्रक की आवाज़ थी.

जैक के पिता का एक पेट्रोल पम्प था.

उसके बाहर एक ट्रक खड़ा था.

“पों! पों!

ट्रक को डीजल चाहिए था.

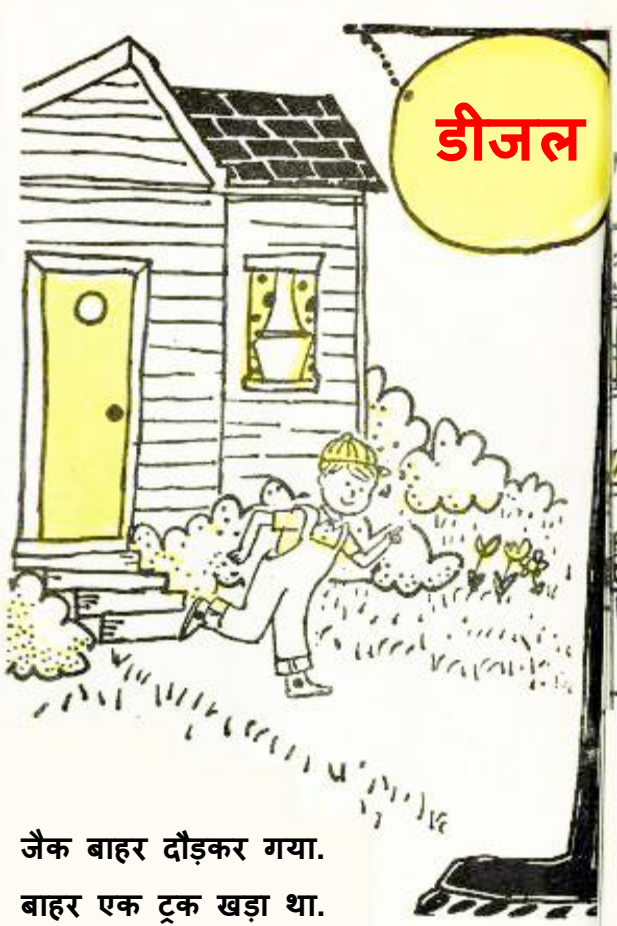

जैक बाहर दौड़कर गया.
बाहर एक ट्रक खड़ा था.
पेट्रोल पम्प के सामने.

वो ट्रक,
बत्तखों और मुर्गियों से भरा था.
“पों! पों!

“क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूँ, पिताजी?” जैक ने पूछा.

“ट्रक में डीजल भर दो,” पिताजी ने कहा.

फिर जैक डीजल भरने पेट्रोल पम्प की तरफ दौड़ा.

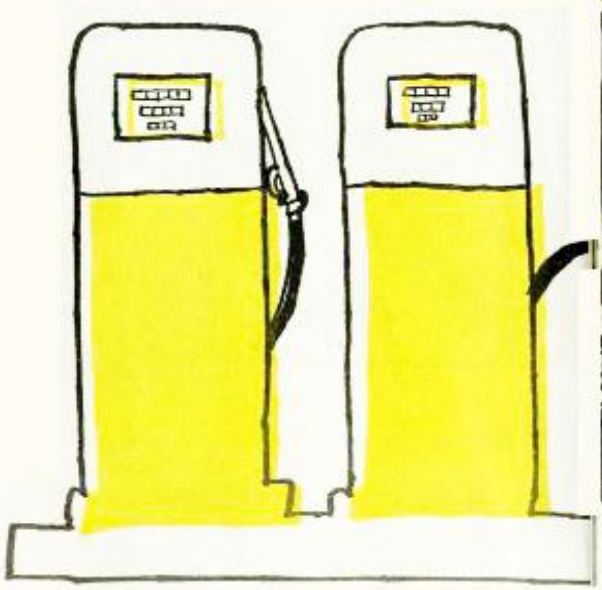

उसने ट्रक की टंकी में डीजल भरा.

“टंकी पूरी भर गई है!” जैक ने ड्राईवर से कहा.
“कुल डीजल पांच डॉलर का हुआ.”
“धन्यवाद,” ट्रक ड्राईवर ने कहा.
“यह लो पांच डॉलर.
एक, दो, तीन, चार और पांच.
“और यह सिक्का तुम्हारे लिए, बक्शीश!”
उसके बाद ट्रक ड्राईवर अपनी बत्तखों और
मुर्गियों को लेकर वहां से चला गया.

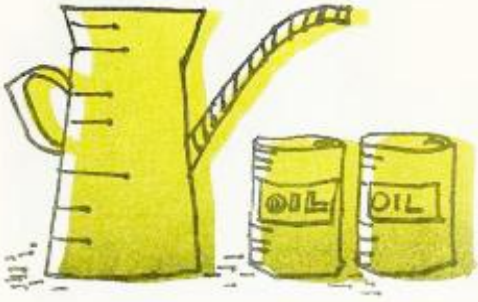

क्वेक! क्वेक!

वो ट्रक की आवाज़ नहीं थी!

जैक ने इधर-उधर देखा.

वो आवाज़ किसकी थी?

क्वेक! क्वेक!

जैक को एक नन्ही पीली बत्तख दिखी.

उसने उसे उठा लिया.

“अरे! तुम ट्रक में से गिर गईं!”
जैक ने कहा.
“तुम फ़िक्र मत करो बत्तख.
तुम मेरी पालतू बत्तख बन सकती हो.”
फिर जैक ने सोचा,
“देखो मेरे पास बहुत सारे पालतू जानवर हैं?”
उसने बत्तख को अपनी कमीज़ में रखा.
“तुम अभी यहीं रहो,” उसने बत्तख से कहा.
“यह पता चलने तक कि तुम मेरे पास रह
सकती हो, या नहीं, तुम यहीं रहो.”

फिर जैक घर में दौड़ा हुआ गया.
क्वेक! क्वेक!
देखो, यह नन्ही सी बत्तख
कितनी ज़ोर की आवाज़ कर रही है!
“चुप रहो!” जैक ने बत्तख से कहा.

“यह क्या है?” पिताजी ने पूछा.

“आपका क्या मतलब?” जैक ने पूछा.

“वो क्वेक! की आवाज़!”

“कौन सी क्वेक! की आवाज़!” जैक ने पूछा.

“माँ, क्या तुम्हें क्वेक! की आवाज़ सुनाई दी?” पिताजी ने पूछा.

“कौन सी क्वेक! की आवाज़?” माँ ने पूछा.

“बत्तख की क्वेक!” पिताजी ने कहा.

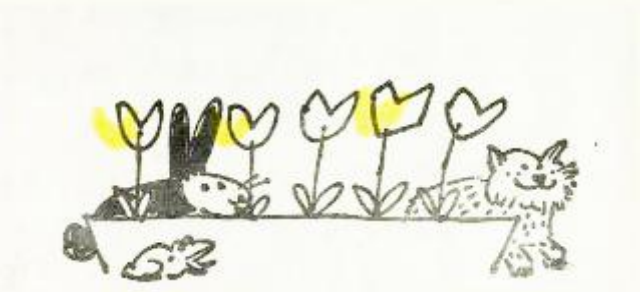

“जैक, क्या तुम्हें क्वेक! क्वेक!
की आवाज़ सुनाई दी? माँ ने पूछा.
“कौन सी क्वेक! क्वेक?” जैक ने पूछा.

क्वेक! क्वेक! क्वेक! क्वेक!
फिर नन्ही बत्तख ने आवाज़ की.
उसने अपना सिर बाहर निकाला.
क्वेक! क्वेक!

“जैक,” माँ ने कहा.

“तुम्हारे पास बहुत सारे पालतू जानवर हैं.
अब तुम उस बत्तख को वापिस कर दो!”

“मैं तो सिर्फ मज़ाक कर रहा था, माँ,”
जैक ने कहा.

“देखो अब कोई मज़ाक नहीं,” माँ ने कहा,
“अब घर में और कोई पालतू जानवर नहीं!
उस ऊंची आवाज़ वाली बत्तख को तुरंत
जाकर वापिस कर दो.”

जैक, बत्तख को उसके ट्रक तक
वापिस नहीं ले जा सकता था.
इसलिए वो बत्तख को शहर में ले गया.
वहां वो एक मिठाई की दुकान में गया.

"क्या आपको एक नन्ही पीली बत्तख चाहिए?"
उसने मिठाई की दुकान के मालिक से पूछा.
"हाँ, ज़रूर," मालिक ने कहा.

“अरे वाह! कितनी मोटी बत्तख है!
उसका मांस बहुत ही स्वादिष्ट लगेगा!”
“आप उसे पका कर खायेंगे?” जैक ने कहा.
“ऐसा न करें! मेरे बत्तख मुझे वापिस करें!”

फिर जैक सड़क पर आगे बढ़ा.

वहां उसे एक छोटी लड़की दिखी.
“क्या तुम्हें एक पालतू नन्ही पीली बत्तख चाहिए?” जैक ने पूछा.
“ज़रूर!” लड़की ने उत्तर दिया.

लड़की ख़ुशी से ऊपर-नीचे कूदने लगी.

“हाँ, ज़रूर!”

“क्या तुम उसे रोजाना खाना दोगी?”

जैक ने पूछा.

“हाँ,” लड़की ने कहा,

“मैं उसे रोज़ खाना दूँगी.”

“अलविदा, नन्ही बत्तख,” जैक ने कहा.
“काश मैं तुम्हें पाल सकता. अलविदा!”

उसके बाद जैक अपने घर वापिस गया.
वो बहुत खुश नहीं था.
“काश मैं उस बत्तख को
अपने पास रख सकता,” उसने सोचा.

तभी माँ ने कहा, “जैक, क्या तुमने वो बत्तख लौटा दी?”

“हाँ, माँ,” जैक ने कहा. “मैंने वो लौटा दी.”

क्वेक! क्वेक!

“फिर यह क्वेक! क्वेक! की आवाज़ कहाँ से आ रही है?” माँ ने पूछा.

“कौन सी क्वेक! क्वेक! की आवाज़?” जैक ने पूछा.

“वो क्वेक! क्वेक!” माँ ने कहा.

“मैंने तो वो बत्तख किसी को दे दी,”
जैक ने कहा, “मैंने एक छोटी लड़की
को बत्तख दे दी.”
फिर जैक को नन्ही बत्तख दिखाई दी.
“देखो!” जैक ने कहा.
“मैं जहाँ जाता हूँ वो भी वहीं जाती है!”

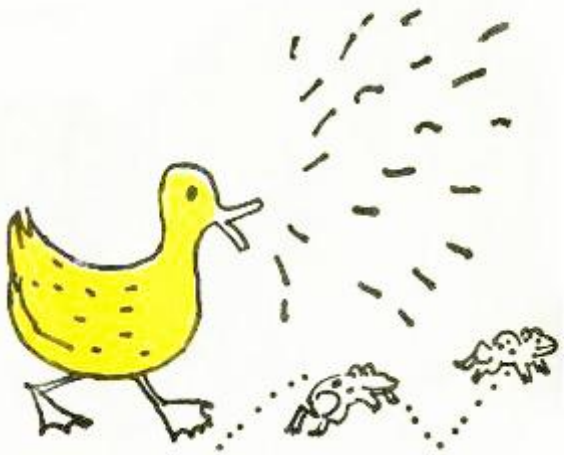

“घर में और कोई भी पालतू जानवर नहीं!”
माँ ने सख्ती से कहा.

जैक के पिताजी ने उसे बुलाया.
“क्या तुम मेरे साथ आना चाहते हो, जैक?
एक कार फंस गई है.
मुझे वहां जाकर उसकी मदद करनी है.”
“ज़रूर!” जैक ने कहा.
“मैं भी आपके साथ चलूँगा!”
फिर जैक अपने पिताजी के साथ
ट्रक में बैठा.
“उस कार को हमारी सख्त ज़रुरत है!”
जैक के पिताजी ने कहा.

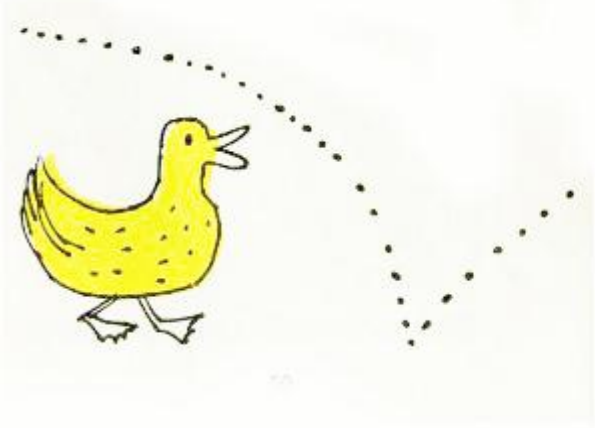

उसके बाद वो पहाड़ी से तेज़ी से नीचे उतरे!

फिर वे तेज़ी से एक पहाड़ी के ऊपर चढ़े.

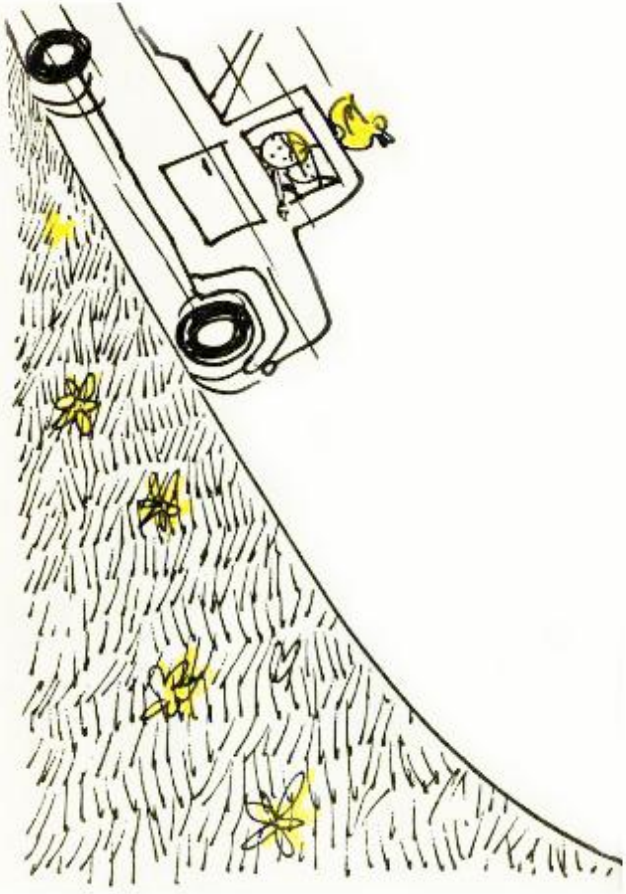

जैक के पिताजी को कुछ लोग दिखे.
वो अपने ट्रक का हॉर्न बजाना चाहते थे.
पर ट्रक का हॉर्न ख़राब था!
जैक के पिताजी को समझ नहीं आया
कि वो उस मौके पर वो क्या करें.
वो हॉर्न बजाना चाहते थे!
पर हॉर्न बिल्कुल ख़राब हो गया था!
वो पहाड़ी से नीचे उतरे.

क्वेक! क्वेक!

वो बत्तख उनके ट्रक में ही थी!

क्वेक! क्वेक!

“देखिए,” जैक ने कहा.

लोगों ने बत्तख की आवाज़ सुनी,

और भीड़ रास्ते से हट गई.

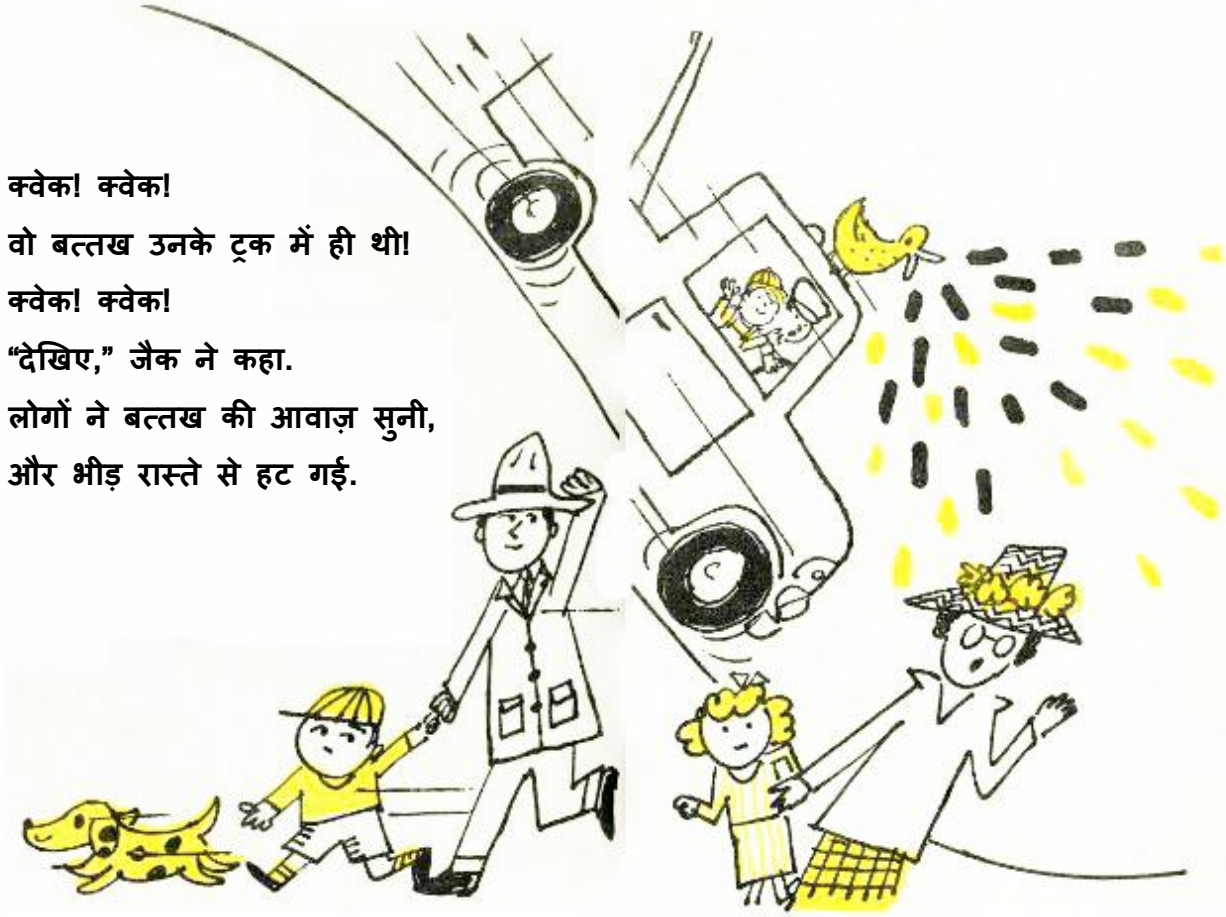

“कितना अच्छा हुआ कि तुम
हमारे साथ आईं!” जैक ने कहा.
“तुम एक बहुत अच्छी छोटी
बत्तख हो जिसकी क्वेक! क्वेक!
बड़ी बुलंद है!”

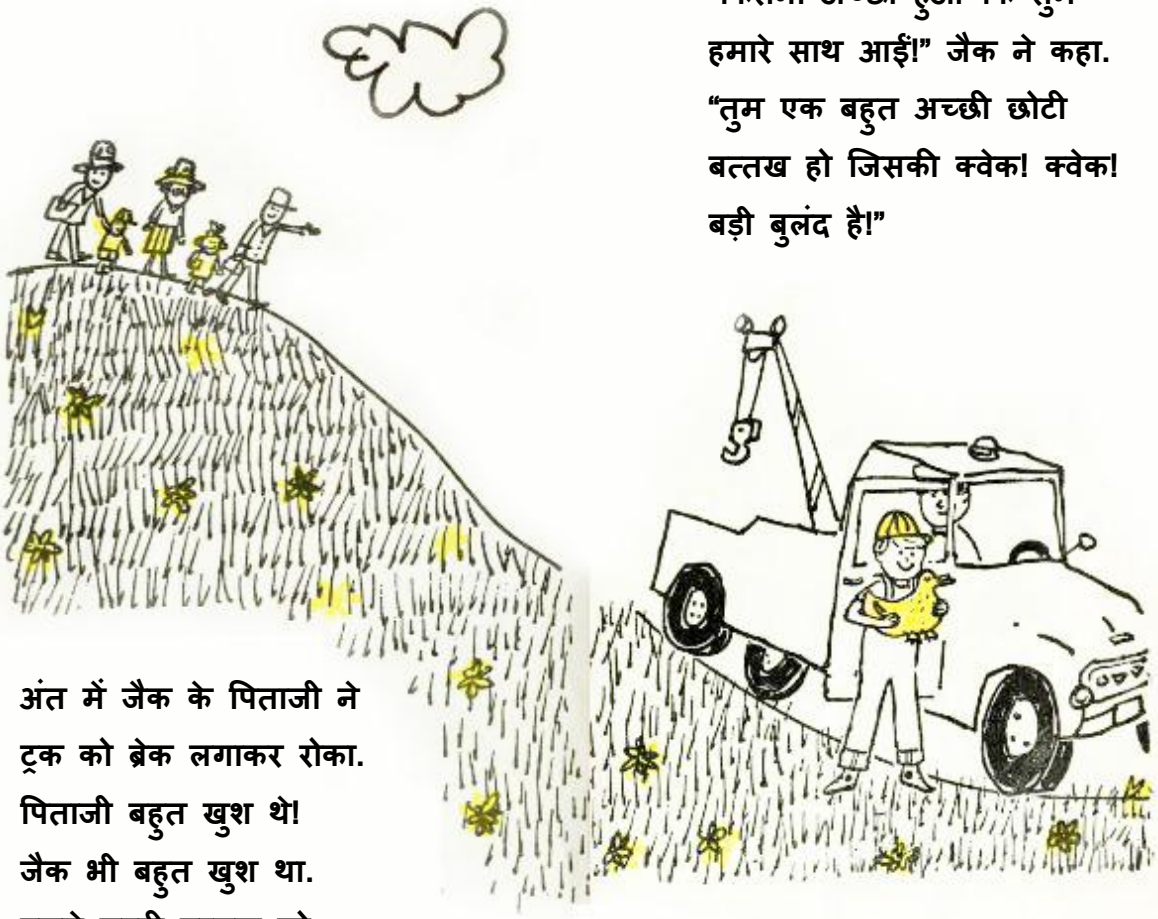

अंत में जैक के पिताजी ने
ट्रक को ब्रेक लगाकर रोका.
पिताजी बहुत खुश थे!
जैक भी बहुत खुश था.
उसने नन्ही बत्तख को
अपनी गोद में उठा लिया.

उसके बाद लोग बत्तख को देखने के लिए दौड़े.
“हमारा सौभाग्य है कि बत्तख ट्रक पर थी,”
जैक के पिताजी ने कहा.
“ट्रक पर बत्तख को बहुत-बहुत बधाई!”

बत्तख ने बाएं-दाएं देखा.
“क्वेक! क्वेक!” बत्तख ने कहा.
“मुझे तुम्हारी क्वेक! क्वेक!
बहुत पसंद है,” जैक ने पिताजी ने कहा.
“कौन सी क्वेक!” जैक ने हँसते हुए कहा.
“वो सी क्वेक!” पिताजी ने कहा.
“तुम्हारी नई पालतू बत्तख की क्वेक!”

AIR